६. ग्रन्थका विषय

सत्प्ररूपणाके प्रथम भागमें आचार्य गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका विवरण कर चुके हैं। अब इस भागमें पूर्वोक्त विवरणकेआश्रयसे धवलाकार वीरसेन स्वामी उन्हींका विशेष प्ररू पण करते हैं---

संपहि संतसुत्तविवरणसमत्ताणंतरं तेसिं परुवणं भणिस्सामो। (पृ. ४१३)

किन्तु इस विशेष प्ररूपणमें उन्होंने गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति आदि वीस प्ररूपणाओं द्वारा जीवोंकी परीक्षा की है। यह वीस प्ररूपणाओंका विभाग पूर्वोक्त सत्प्ररूपणाके सूत्रोंमें नहीं पाया जाता और इसीलिये टीकाकारने एक शंका उठाकर यह बतला दिया है कि सूत्रोंमें स्पष्टत: उल्लिखित न होनेपर भी इन वीस प्ररूपणाओंका सूत्रकारकृत गुणस्थान और मार्गणास्थानोंके भेदोंमें अन्तर्भाव जाता है, अत: ये प्ररूपणाएं सूत्रोक्त नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। (पृ. ७१७)

' सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थ विंशतिविधानेन प्ररू पणोच्यते ' । ' न पौनरुक्त्यमपि कथंचित्तेभ्यो भेदात् '। (पृ. ४१८)

इससे यह तो स्पष्ट है कि यह वीस प्ररूपणारूप विभाग पुष्पदन्ताचार्यकृत नहीं है। वह स्वयं धवलाकारकृत भी नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन प्ररूपणाओंका नामनिर्देश करनेवाली एक प्राचीन गाथाको 'उक्तं च' रूपसे उद्धृत किया है। इस विभागका प्राचीनतम निरूपण हमें यतिवृषभाचार्यकृत तिलोयपण्णत्तिमें मिलता है। यथा---

गुण-जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवजोगा कहिदव्वा णारइयाणं जहाजोग्गं ॥२७३॥

***

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो ।
उवजोगा कहिदव्वा एदाण कुमारदेवाणं ॥१८३॥
आदि.

किन्तु यह अभी निश्चयत: नहीं कहा जा सकता कि इस वीस प्ररूपणारुप विभागका आदिकर्ता कौन है? यह विषय अन्वेषणीय है।

गुणस्थानों और मार्गणास्थानके अनेक भेद प्रभेदोंका विशिष्ट जीवोंकी अपेक्षासे सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त-रूपप्ररूपण करनेसे आलापोंकी संख्या कई सौ पर पहुंच जाती है । इस आलाप विभागका परिचय विषय सूचीको देखनेसे मिल सकता है। अत: उस सम्बंधमें यहां विशेष कथनकी आवश्यकता नहीं है। प्रथम भागकी भूमिकामें गुणस्थानों और मार्गणाओंका सामान्य परिचय देकर यह सूचित किया गया था कि अगले खंडमें विषयक विशेष विवेचन किया जायगा। किन्तु इस भागका कलेवर अपेक्षासे अधिक बढ गया है और प्रस्तावना भी अन्य उपयोगी विषयोंकी चर्चासे यथेष्ट विस्तृत हो चुकी है। अत: हम उक्त विषयके विशेष विवेचन करनेकी आकांक्षाका अभी फिर भी नियंत्रण करते हैं।